श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त - 2023

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. केवलज्ञान ………………… भाव का है।
२. ………………… ऐसी आत्मा का मूर्तिमंत ऐसे कर्म से उपकार या अपकार हो ही नहीं सकता है।
३. बिना सोचे-विचारे किसी पर आरोप लगाना यह……………… ।
४. ……………… परमात्मा पूजा के लिये ही करना।
५. यह जीवन भी हमारे……………… को घटाने वाले के बदले बढाने वाले ही साबित होंगे।
६. ……………… ज्ञान मिथ्यात्वी को नहीं होता।
७. साधना के मार्ग पर हमारे ……………… को सत्य से श्रृंगारित करना अनिवार्य है।
८. …………… श्रावक को करने योग्य कर्तव्य है।
९. रागद्वेष आदि के कारण……………… मलीन है।
१०. अनेक अयोग्य वासना का निर्माण ………………में से होता है।
११. ……………… अपने सिद्धांतो में अटल है।
१२. धर्मवंत प्राणियो का……………… और पापी प्राणियो का सोना ही कल्याणकारी है।
१३. घी-तेल में मिलावट करना वो …………………… अतिचार।
१४. ध्यानरुपी जल के द्वारा जीव को सदा जो…………… होता है उसे भावस्नान कहते है।
१५. मानव का भव……………… के लिये ही मिला.है।
१६. ग्रहण के दिन……………… नहीं करना चाहिये।
१७. ……………… का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अविभाज्य अंश उसे पर्याय कहा जाता है।
१८. ……………… करने के पश्चात भावस्नान से आत्मा को निर्मल करना चाहिये।
१९. दो से तेरह वस्तु का ज्ञान वो…………………… ।
२०. जब……………… हो तब दो अंको से वर्गमूल ढूंढने में आता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. एक संपूर्ण मार्गणा का ज्ञान क्या कहलाता है ?
२. "द्वादशमासाः" - संवत्सरः" यह वेद पद किस प्रकार के है ?
३. "इस बहन ने घडे का चिंतन किया है " यह कौनसा ज्ञान ?
४. अग्निभूति को कर्म है या नहीं इसका संदेह किससे हुआ ?
५. चोरी का समावेश किसमें होता है ?
६. श्री अजितनाथ और श्रीशांतिनाथ की शरण कैसी है ?
७. चोर की चोरी हुई वस्तु बिकवा देना वह कौनसा अतिचार है ?
८. श्रीअग्निभूति का गोत्र कौनसा था ?
९. जो मेरी नहीं है ऐसी वस्तु पर स्वयं की सत्ता जमाना, ऐसी मनोवृति को क्या कहा जाता है ?
१०. निगमाधिक नय की प्रतिती में निपुण ऐसे कौनसे भगवान है ?
११. तिर्च्छी पवन बहे तब कौनसा तत्व जानना ?
१२. झूठ बोलने से अटकना या रुकना, वह क्या कहलाता है ?
१३. नींद उडती न हो तो क्या करना चाहिये ?
१४. शृंखला से बंधे हुए दीपक के समान कौनसा अवधिज्ञान है ?
१५. दर्शनावरणीय कर्म किसके समान है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. अभिगहा २) गरुल ३) स्तेन ४) देहदेशस्य ५) पराधं ६) केवलम् ७) निचिअं ८) संघाया ९) ज्ञेया
१०. विक्रवंभ ११) वच्छादित १२) नित्तम १३) धम्मिणं १४) निदा १५) स्थौल्यं १६) समयं १७) तर्जन्या
१८. तदुच्यते १९) शुद्धम् २०) विमुति

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) निर्व्याघात	१) अवधिज्ञान	६) परिधी	६) केवलज्ञान
२) नागकुमार	२) अनुयोग	७) मदिरा	७) आकाश
३) अमूर्त	३) उपघात	८) आनंद श्रावक	८) असुर
४) हीयमान	४) परिरय	९) सत् पद प्ररुपणा	९) मतिज्ञान
५) क्षायोपशमिक भाव	५) मनःपर्यवज्ञान	१०) ऋजुमति	१०) धर्मजांगरिका

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. गुणप्रत्ययकी अवधिज्ञान कितने प्रकार का होता है ?
२. वेद पद कितने प्रकार के है ?
३. मृषावाद विरमणव्रत के प्रकार कितने ?
४. दृष्टिवाद में मुख्य कितने प्रकार है ?
५. कितनी तिथीयों में दातुन का निषेध है ?
६. लिये हुए पच्चकखाण पालन के लिये सहायक होने हेतु कितने नियम दिये गये है ?
७. रात्रि की अंतिम दो घडी में देखा गया स्वप्न कितने दिन में फल देता है ?
८. आचारांगसूत्र का प्रमाण कितने पद का कहा गया है ?
९. मार्गणा के उत्तरभेद कितने ?
१०. अग्निभूति ने दीक्षा ली तब उनकी उम्र कितनी थी ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. क्रोध, मान, ईर्ष्या, विषाद से उत्पन्न हुए वो कुस्वप्न कहलाते है ।
२. सूक्ष्म झूठ बोलना पडे उसकी श्रावक जयणा रखता है ।
३. आया हुआ अवधिज्ञान जाय नहीं वो अप्रतिपाती अवधिज्ञान ।
४. यदि निद्रा में कुस्वप्न देखा हो तो "चंदेसु निम्मलयरा" तक का कायोत्सर्ग करना ।
५. हाथ को ४२ से गुणा करने पर अंगुल आयेगा ।
६. जल और पृथ्वी तत्व में निद्रा विच्छेद हो तो अच्छा ।
७. मूर्त ऐसी आत्मा को अमूर्त कर्म लगेगा ही कहां से ।
८. द्रव्य स्नान से अपकाय जीवो की विराधना होती है ।
९. परिधि को व्यास से गुणाकार करने पर गोल वस्तु का क्षेत्रफल आता है ।
१०. असत्य सदा-सर्वदा और सर्वत्र निर्भय होता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. पापी जागे तो पाप करे ।
२. दांत की पीठीका प्रथम तर्जनी उंगली से घिसना ।
३. माता तुंबडी कितनी कडवी है ।
४. अपने पाप और दोषो का भान होने पर उसे त्यागने का पुरुषार्थ करते है ।
५. स्वयं की छोटी उंगली जितना मोटा होना चाहिये ।
६. हिम का समूह सुलग जाय यह कदाचित संभव हो सकता है पर मेरा भाई हार जाय यह संभवित ही नहीं है ।
७. साधु को अदत्त का त्याग होता है ।
८. ग्रहण किये हुए नियमो के पालन करने वीर्य स्फुरित करते है ।
९. सूक्ष्म तृण तथा लकडी-काठी वगैरह जो मार्ग में पडे हो उसकी जयणा रखते है ।
१०. न करने जैसे पाप से हमारे हाथ भर जाते है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मृषावाद विरमण व्रत के प्रकार । २) मनः पर्यवज्ञान । ३) भावस्नान उदाहरण के साथ ।
४. इन्द्रभूति ने दीक्षा ले ली, यह सुनकर अग्निभूति ने क्या विचार किया ?
५. अशुभ स्वप्न फल निवारण ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com